

Term-End Examination December, 2024

BPSE-143: भारत में राज्य राजनीति

MOST IMPORTANT QUESTIONS (HINDI)

MUST WATCH TO SCORE GOOD MARKS

PART-3

भारत की चुनावी राजनीति के मुख्य मुद्दों पर चर्चा कीजिए।

भारत की चुनावी राजनीति के मुख्य मुद्दे समय-समय पर बदलते रहते हैं, लेकिन कुछ मुद्दे ऐसे हैं जो हमेशा चुनावों में महत्वपूर्ण रहे हैं और भारतीय राजनीति को प्रभावित करते हैं। ये मुद्दे समाज के विभिन्न पहलुओं से जुड़े होते हैं, जैसे अर्थव्यवस्था, सामाजिक न्याय, धर्म, और राष्ट्रीय सुरक्षा। आइए, भारत की चुनावी राजनीति के कुछ मुख्य मुद्दों पर चर्चा करें:

1. धार्मिक और सांस्कृतिक मुद्दे:

भारत में धर्म एक महत्वपूर्ण और संवेदनशील मुद्दा है, जो चुनावों में अक्सर प्रमुख रूप से उभरता है। धार्मिक पहचान और धार्मिक ध्रुवीकरण की राजनीति चुनावी मैदान में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। कुछ राजनीतिक दल धर्म के आधार पर वोट बैंक बनाने की कोशिश करते हैं, जिससे चुनावों में धार्मिक भावनाओं का दोहन होता है।

उदाहरण:

राम मंदिर आंदोलन और **धार्मिक कट्टरता** जैसे मुद्दे भारतीय चुनावी राजनीति में अहम रहे हैं। कुछ दल इसे अपने फायदे के लिए इस्तेमाल करते हैं, जिससे चुनावों में धार्मिक मुद्दे प्रमुख हो जाते हैं।

2. आर्थिक मुद्दे:

आर्थिक नीतियाँ और योजनाएँ भी चुनावी राजनीति के महत्वपूर्ण मुद्दे होते हैं। बेरोज़गारी, महंगाई, गरीबी, और रोजगार सृजन जैसे मुद्दे चुनावों में अहम रहते हैं। सरकारें अपनी विकास योजनाओं और आर्थिक सुधारों को प्रमुख रूप से प्रस्तुत करती हैं।

उदाहरण:

नोटबंदी (2016) और **GST (Goods and Services Tax)** जैसे निर्णयों का असर सीधे तौर पर चुनावों में पड़ता है, क्योंकि इन फैसलों का जनता पर गहरा प्रभाव पड़ता है। इसके अलावा, **कृषि क्षेत्र की स्थिति** और **किसान आंदोलन** भी चुनावों में एक महत्वपूर्ण मुद्दा बन जाते हैं।

3. जातिवाद और सामाजिक न्याय:

भारत में जातिवाद एक प्रमुख सामाजिक मुद्दा है, जो चुनावों में गहरी भूमिका निभाता है। विभिन्न जाति समूहों को अपनी आवाज़ और अधिकारों की रक्षा के लिए राजनीतिक समर्थन की आवश्यकता होती है। **आरक्षण (reservations)** का मुद्दा भी जातिवाद और सामाजिक न्याय से जुड़ा हुआ है, जो चुनावों में कई

बार प्रमुख बनता है।

उदाहरण:

मंडल आयोग (1990) की सिफारिशों के तहत ओबीसी को आरक्षण, और हाल ही में **आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग (EWS)** के लिए आरक्षण, जातिवाद को चुनावी मुद्दा बनाते हैं। जातीय आधार पर वोट बैंक की राजनीति चुनावों में गहराई से असर डालती है।

4. राष्ट्रीय सुरक्षा और आतंकवाद:

भारत की चुनावी राजनीति में **राष्ट्रीय सुरक्षा** एक बड़ा मुद्दा बनता है, खासकर जब सीमा पार आतंकवाद, पाकिस्तान, या किसी अन्य सुरक्षा खतरे की बात होती है। चुनावों में राष्ट्रीय सुरक्षा के मुद्दे पर वोट मांगे जाते हैं, और यह सुनिश्चित किया जाता है कि नेता अपने सुरक्षा कार्यों और नीतियों पर जनता का विश्वास जीतें।

उदाहरण:

उरी हमले (2016) और **बालाकोट हवाई हमला** (2019) जैसे घटनाएँ चुनावी मुद्दे बनीं, जहां सरकार ने आतंकवाद के खिलाफ अपनी कड़ी नीतियों और सैन्य कार्रवाई को प्रमुख मुद्दे के रूप में पेश किया।

5. संविधान और राजनीतिक सुधार:

संविधान और राजनीति में सुधार, जैसे **धारा 370** का निरसन (2019) या **संविधान संशोधन** आदि, भी चुनावी मुद्दे बन सकते हैं। इन सुधारों का प्रभाव न केवल राजनीतिक दृष्टिकोण से होता है, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक बदलावों पर भी गहरा असर डालता है।

उदाहरण:

जम्मू और कश्मीर का विशेष दर्जा और **नागरिकता संशोधन अधिनियम (CAA)** जैसे विवादास्पद मुद्दे चुनावों में प्रमुख बन जाते हैं, क्योंकि इनसे जनता की भावनाएं जुड़ी होती हैं।

6. स्वास्थ्य और शिक्षा:

स्वास्थ्य और शिक्षा जैसे सामाजिक क्षेत्र भी चुनावी मुद्दे बनते हैं, क्योंकि ये जनता की बुनियादी आवश्यकताएँ हैं। सरकारें अपनी योजनाओं, जैसे **आयुष्मान भारत योजना** (स्वास्थ्य बीमा योजना) और **स्वच्छ भारत अभियान**, को चुनावों में प्रमुखता से पेश करती हैं।

उदाहरण:

स्वास्थ्य सेवा और शिक्षा में सुधार का मुद्दा हमेशा चुनावी अभियानों में प्रमुख होता है, खासकर तब जब सरकार शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में विकास के नए प्रस्ताव देती है।

7. विकास और इंफ्रास्ट्रक्चर:

विकास कार्य, जैसे सड़क निर्माण, रेलवे, बिजली, पानी, और इंटरनेट जैसी बुनियादी सुविधाओं की उपलब्धता, चुनावी राजनीति में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। प्रत्येक पार्टी अपने विकास कार्यों और भविष्य की योजनाओं का प्रचार करती है।

उदाहरण:

प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना (PMGSY) और **उज्वला योजना** जैसी योजनाओं को चुनावों में बड़े मुद्दों के रूप में पेश किया जाता है, जो लोगों के जीवनस्तर को सुधारने का वादा करती हैं।

निष्कर्ष:

भारत की चुनावी राजनीति में विभिन्न मुद्दे महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जिनमें धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक, और राष्ट्रीय सुरक्षा जैसे विषय शामिल हैं। इन मुद्दों के माध्यम से राजनीतिक दलों को जनता से समर्थन प्राप्त होता है और चुनावी परिणामों पर प्रभाव पड़ता है। चुनावों में मुद्दों का चुनाव और उनका प्रभाव समय और परिस्थिति के अनुसार बदलता रहता है, और यह भारतीय लोकतंत्र की विविधता और जटिलता को दर्शाता है।

एकदलीय प्रभुत्व प्रणाली पर अपना विचार व्यक्त कीजिए।

एकदलीय प्रभुत्व प्रणाली (One-Party Dominance System) एक राजनीतिक प्रणाली है, जिसमें किसी एक पार्टी का चुनावी परिदृश्य पर लंबे समय तक प्रभुत्व रहता है, और अन्य पार्टियाँ अपेक्षाकृत कमजोर या हाशिये पर रहती हैं। इस प्रणाली में एक प्रमुख पार्टी बार-बार चुनाव जीतती है और सत्ता पर नियंत्रण बनाए रखती है, जबकि अन्य पार्टियाँ अपनी पहचान और प्रभाव बढ़ाने में संघर्ष करती हैं। भारत में एकदलीय प्रभुत्व प्रणाली का सबसे प्रमुख उदाहरण **भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (INC)** के नेतृत्व में है, जो स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से 1970 तक भारतीय राजनीति में प्रमुख रूप से एकदलीय प्रभुत्व का प्रतीक बनी रही।

एकदलीय प्रभुत्व प्रणाली की विशेषताएँ:

1. **लंबे समय तक सत्ता का केंद्रीकरण:** एकदलीय प्रभुत्व में एक ही पार्टी, अक्सर अपने संगठन और नेतृत्व के प्रभाव से, देश में सत्ता पर लंबे समय तक काबिज रहती है। इस प्रणाली में अन्य राजनीतिक दलों को सत्ता में आने के सीमित अवसर मिलते हैं।

उदाहरण:

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (INC) ने भारत में स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद लगभग 1950 से 1970 तक प्रमुख रूप से सत्ता पर प्रभुत्व रखा। नेहरू, शास्त्री और इंदिरा गांधी जैसे नेताओं के नेतृत्व में कांग्रेस ने लंबे समय तक सरकार बनाई।

2. **विरोधी दलों का कमजोर होना:** इस प्रणाली में, विपक्षी दल या तो छोटे होते हैं या उनके पास राष्ट्रीय स्तर पर प्रभावी नेतृत्व और संसाधनों की कमी होती है। ऐसे में एक प्रमुख पार्टी अपनी नीतियों और कार्यक्रमों के जरिए सत्ता पर लगातार काबिज रहती है।

उदाहरण:

कांग्रेस के प्रभुत्व के दौरान विपक्षी दलों जैसे भारतीय जनता पार्टी (BJP) और समाजवादी दलों को राष्ट्रीय स्तर पर प्रमुख पहचान और समर्थन प्राप्त नहीं था। कांग्रेस की एकमात्र प्रमुख पार्टी के रूप में स्थिति थी।

3. **स्थिरता और विकास की संभावना:** एकदलीय प्रभुत्व प्रणाली में राजनीतिक स्थिरता बनी रहती है, क्योंकि सरकार लगातार बनी रहती है और विकास कार्यों के लिए निरंतरता बनी रहती है। यह राष्ट्रीय नीति बनाने में मदद करती है, जिससे दीर्घकालिक योजना और विकास के कार्यों को क्रियान्वित किया जा सकता है।

उदाहरण:

नेहरू के नेतृत्व में स्वतंत्रता के बाद भारत में औद्योगिकीकरण और हरित क्रांति जैसी योजनाओं

का सशक्त क्रियान्वयन हुआ। कांग्रेस की एकदलीय प्रभुत्व प्रणाली ने इन योजनाओं को प्रभावी ढंग से लागू किया।

एकदलीय प्रभुत्व प्रणाली के फायदे:

- राजनीतिक स्थिरता:**
एकदलीय प्रभुत्व प्रणाली में सरकार का स्थायित्व होता है, जिससे निर्णय लेने की प्रक्रिया तेज़ और प्रभावी होती है।
- दीर्घकालिक विकास योजनाएँ:**
सत्ता में स्थिरता से दीर्घकालिक योजनाओं का क्रियान्वयन संभव होता है, जैसे उद्योग, शिक्षा, स्वास्थ्य, आदि क्षेत्रों में समग्र विकास।
- केंद्रीकृत शासन:**
एक पार्टी द्वारा सरकार चलाने से नीतियों में निरंतरता रहती है और प्रशासन के विभिन्न पहलुओं में समन्वय बना रहता है।

एकदलीय प्रभुत्व प्रणाली के नुकसान:

- लोकतांत्रिक विविधता का अभाव:**
विपक्षी दलों का दबाव और आलोचना कम हो जाता है, जिससे लोकतंत्र में विविधता और प्रतिस्पर्धा की कमी हो जाती है। इससे एकदलीय शासन में सत्ता का दुरुपयोग हो सकता है।
- विकल्पों का अभाव:**
जब एक पार्टी का प्रभुत्व रहता है, तो जनता को सीमित विकल्प मिलते हैं, जिससे चुनावी प्रतिस्पर्धा में कमी आती है।
- सत्ता का केंद्रीकरण:**
सत्ता के केंद्रीकरण से न केवल राजनीतिक निर्णय में पक्षपाती दृष्टिकोण आ सकता है, बल्कि यह जनहित के खिलाफ निर्णय लेने की संभावना भी बढ़ा सकता है।

निष्कर्ष:

भारत में एकदलीय प्रभुत्व प्रणाली ने कांग्रेस पार्टी के नेतृत्व में देश में स्थिरता, विकास और राष्ट्रनिर्माण के महत्वपूर्ण कदम उठाए। हालांकि, लोकतांत्रिक व्यवस्था में यह प्रणाली समस्याएँ भी पैदा कर सकती है, जैसे कि विपक्षी दलों का कमजोर होना और सत्ता का केंद्रीकरण। लोकतांत्रिक राजनीति में प्रतिस्पर्धा और बहुमत की विचारधारा जरूरी है, ताकि लोगों को विभिन्न विचारों और विकल्पों का अवसर मिल सके। इसलिए, एकदलीय प्रभुत्व प्रणाली के फायदे और नुकसान दोनों को समझते हुए, लोकतंत्र को अधिक प्रतिस्पर्धी और समावेशी बनाए रखने की आवश्यकता है।

प्रवासन (Migration) तथा वैश्वीकरण के बीच संबंधों की व्याख्या कीजिए।

प्रवासन (Migration) और वैश्वीकरण (Globalization) दो महत्वपूर्ण सामाजिक और आर्थिक प्रक्रियाएँ हैं, जो आपस में गहरे रूप से जुड़ी हुई हैं।

प्रवासन वह प्रक्रिया है जिसमें लोग एक स्थान से दूसरे स्थान पर स्थायी या अस्थायी रूप से बसने के लिए जाते हैं, जबकि वैश्वीकरण एक ऐसा वैश्विक नेटवर्क है, जो देशों, समाजों और संस्कृतियों को आपस में जोड़ता है। इन दोनों के बीच एक मजबूत संबंध है, जो विभिन्न रूपों में दिखाई देता है।

1. वैश्वीकरण ने प्रवासन को बढ़ावा दिया:

वैश्वीकरण ने दुनिया भर में आर्थिक, सांस्कृतिक, और सामाजिक संपर्कों को बढ़ाया है। इसके परिणामस्वरूप, देशों के बीच व्यापार, सूचना, और लोगों का आवागमन अधिक सुगम हुआ है। इससे विभिन्न देशों में रोजगार के अवसरों की उपलब्धता बढ़ी है, जिसके कारण लोग बेहतर जीवन की तलाश में अपने देश से दूसरे देशों में प्रवास करने लगे हैं।

उदाहरण:

संयुक्त राज्य अमेरिका (USA) और **संयुक्त अरब अमीरात (UAE)** जैसे देशों में प्रवासियों की बड़ी संख्या है, क्योंकि वैश्वीकरण के कारण इन देशों में रोजगार के बेहतर अवसर उपलब्ध हैं।

2. आर्थिक अवसर और रोजगार:

वैश्वीकरण ने आर्थिक अवसरों को बढ़ाया है, विशेष रूप से उन देशों में जहाँ उद्योगों और सेवाओं में वृद्धि हो रही है। इसमें कंपनियों का विस्तार, वैश्विक व्यापार नेटवर्क का निर्माण, और अंतर्राष्ट्रीय निवेश शामिल हैं, जिनके कारण लोग रोजगार के लिए दूसरे देशों में प्रवास करते हैं।

उदाहरण:

भारत से कई लोग **खाड़ी देशों** में काम करने के लिए जाते हैं, जहां पेट्रोलियम उद्योग और निर्माण क्षेत्र में बहुत सारे रोजगार के अवसर उपलब्ध हैं।

3. सांस्कृतिक और सामाजिक प्रभाव:

वैश्वीकरण के साथ, दुनिया भर में सांस्कृतिक आदान-प्रदान बढ़ा है। विभिन्न देशों और संस्कृतियों के लोग एक-दूसरे से संपर्क करते हैं और अपने अनुभव साझा करते हैं। इसने प्रवासन को एक सामाजिक और सांस्कृतिक पहलू भी प्रदान किया है, जिससे लोग दूसरे देशों में अपनी संस्कृति और जीवनशैली को साझा करने के लिए प्रवास करते हैं।

उदाहरण:

भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश जैसे देशों के लोग दुनिया भर में फैले हुए हैं और वे अपनी संस्कृति, संगीत, खाना, और भाषा को अन्य देशों में प्रचारित करते हैं।

4. पारदर्शिता और संचार में सुधार:

वैश्वीकरण के दौरान संचार और परिवहन के साधनों में सुधार हुआ है, जिससे लोगों के लिए एक देश से दूसरे देश जाने में आसानी हुई है। इंटरनेट, एयरलाइंस, और अन्य डिजिटल प्लेटफार्मों ने इस प्रक्रिया को और अधिक सुलभ बना दिया है।

उदाहरण:

इंटरनेट और सोशल मीडिया ने लोगों को दूसरे देशों में नौकरी के अवसरों के बारे में जानकारी प्रदान की है, जिससे लोग आसानी से प्रवास के फैसले ले पाते हैं।

5. वैश्वीकरण के कारण उत्पन्न सामाजिक असमानताएँ:

हालांकि वैश्वीकरण ने कई अवसर पैदा किए हैं, लेकिन इसके कुछ नकारात्मक प्रभाव भी हैं। वैश्वीकरण से कुछ देशों में संपत्ति और अवसरों की असमानता बढ़ी है, जिससे प्रवासन की प्रवृत्ति और भी बढ़ी है। लोग विकासशील देशों से विकसित देशों की ओर अधिक प्रवास करते हैं, जहां बेहतर जीवन की संभावना होती है।

उदाहरण:

मेक्सिको से लोग **अमेरिका** जाते हैं, क्योंकि अमेरिका में रोजगार के अवसर और जीवन की बेहतर गुणवत्ता उपलब्ध है। इसी तरह, भारत के ग्रामीण क्षेत्रों से लोग शहरी क्षेत्रों की ओर, और फिर शहरी क्षेत्रों से विदेशों की ओर प्रवास करते हैं।

निष्कर्ष:

प्रवासन और वैश्वीकरण एक-दूसरे से गहरे रूप से जुड़े हुए हैं। वैश्वीकरण ने न केवल आर्थिक, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक संबंधों को भी बढ़ावा दिया है, जिसके परिणामस्वरूप प्रवासन की प्रक्रिया अधिक तीव्र और व्यापक हुई है। वैश्वीकरण के कारण विभिन्न देशों के बीच रोजगार, शिक्षा, और जीवन की गुणवत्ता के लिहाज से असमानताएँ बढ़ी हैं, जो प्रवासन को और बढ़ावा देती हैं। इस प्रकार, वैश्वीकरण और प्रवासन दोनों एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं और दुनिया के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य को नया आकार देते हैं।

भारत में जनजातियों के क्षेत्रीय वितरण की चर्चा कीजिए।

भारत में जनजातियों का क्षेत्रीय वितरण भारतीय समाज का एक महत्वपूर्ण और विविध पहलू है। जनजातियाँ भारत के विभिन्न हिस्सों में पाई जाती हैं, और इनका जीवन शैली, संस्कृति, रीति-रिवाज और भाषाएँ भी भिन्न होती हैं। भारत में जनजातियों की संख्या 700 से अधिक है और ये जनसंख्या के एक महत्वपूर्ण हिस्से का निर्माण करती हैं। जनजातियाँ मुख्य रूप से **हिमालयी क्षेत्र, गंगा और यमुना के मैदानों, दक्षिण भारत, और पश्चिमी और मध्य भारत** में बसी हुई हैं। आइए भारत में जनजातियों के क्षेत्रीय वितरण पर चर्चा करें:

1. उत्तर-पूर्वी भारत:

उत्तर-पूर्वी भारत में जनजातियाँ बड़ी संख्या में बसी हुई हैं, खासकर **अरुणाचल प्रदेश, मेघालय, मणिपुर, नागालैंड, त्रिपुरा, और असम** में। इस क्षेत्र में लगभग सभी प्रमुख जनजातियाँ पाई जाती हैं। इनमें से कुछ प्रमुख जनजातियाँ हैं:

- **मगस, कोच, भील, राभा, बोडो** आदि असम और त्रिपुरा में।
- **नागा, कोंग, और संगतम** नागालैंड और मणिपुर में पाई जाती हैं।
- **मिजो, ललुंग** मिजोरम में बसे हुए हैं।

उत्तर-पूर्वी राज्यों में जनजातियाँ अधिकतर कृषि आधारित जीवन जीती हैं और जंगलों से जुड़ी हुई हैं। इनकी संस्कृति में अद्वितीय परंपराएँ, त्योहार और संगीत होते हैं।

2. मध्य भारत:

मध्य भारत में मुख्यतः छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, झारखंड, और उत्तर प्रदेश में जनजातियों का निवास है। इस क्षेत्र में मुख्य रूप से आदिवासी समुदायों का ठिकाना है:

- भील, गोंड, कोरकू, संताली प्रमुख जनजातियाँ हैं।
- गोंड जनजाति मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ में पाई जाती है।
- संताली जनजाति झारखंड और ओडिशा के कुछ हिस्सों में निवास करती है।

मध्य भारत की जनजातियाँ आम तौर पर वन्य जीवन से जुड़ी हुई हैं और शिकार, खेती और छोटे व्यापार करते हैं।

3. पश्चिमी भारत:

राजस्थान और गुजरात में भी कुछ जनजातियाँ बसी हुई हैं। यहाँ की प्रमुख जनजातियाँ हैं:

- भील, नानी, सभील, मीणा आदि राजस्थान में।
- वाडिया, रावल, और नवकांगिया गुजरात और महाराष्ट्र में प्रमुख हैं।

इन जनजातियों की जीवनशैली में कृषि और पशुपालन महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। वे विभिन्न प्रकार की पारंपरिक कला और संस्कृति में शामिल हैं, जैसे कि राजस्थानी कढ़ाई, धरोहर संगीत, और नृत्य।

4. दक्षिण भारत:

दक्षिण भारत में जनजातियाँ विशेष रूप से तमिलनाडु, केरल, कर्नाटका, और आंध्र प्रदेश में बसी हुई हैं। दक्षिण भारत की जनजातियाँ मुख्य रूप से हिल्स (पहाड़ी क्षेत्रों) और जंगलों में निवास करती हैं। यहाँ की प्रमुख जनजातियाँ हैं:

- जेनका, नायक, पारधी, कोल, और मोचा।
- शेडी, पानी और कडार कर्नाटका और तमिलनाडु में पाई जाती हैं।
- गोंड और खसर तेलंगाना और आंध्र प्रदेश में रहते हैं।

दक्षिण भारत की जनजातियाँ भी मुख्य रूप से कृषि, वन उपज और जंगलों से जुड़े व्यवसायों में संलिप्त हैं।

5. हिमालयी क्षेत्र:

हिमालयी क्षेत्र में भी कई जनजातियाँ बसी हुई हैं, जो अपने जीवन में गायन, संगीत, कला और वन उत्पादों का उपयोग करती हैं। यहाँ की प्रमुख जनजातियाँ हैं:

- लाहली, स्पीति, भोटिया, जौनसारी, और गुज्जर हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, जम्मू-कश्मीर और उत्तर भारत के अन्य पहाड़ी क्षेत्रों में पाई जाती हैं।

निष्कर्ष:

भारत में जनजातियों का क्षेत्रीय वितरण विविध है और प्रत्येक जनजाति अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान, जीवनशैली और भाषा के साथ यहाँ निवास करती है। इन जनजातियों की अपनी अलग

परंपराएँ, धार्मिक आस्थाएँ और सामाजिक संरचनाएँ होती हैं। यह क्षेत्रीय विविधता भारतीय समाज की एक महत्वपूर्ण विशेषता है और हमें इन जनजातियों के अधिकारों और सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित रखने की आवश्यकता है।

Scholarly Minds